www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-1* *Issue-5* *December 2024*

कमलेश्वर का जीवन–संघर्ष एवं कृतित्व के विविध आयाम

डॉ0 मधुर बाला यादव

प्रोफेसर, पी.पी.एन. पी.जी. कॉलेज, कानपुर

विजय कुमार

शोध छात्र, पी.पी.एन. पी.जी. कॉलेज, कानपुर

हिन्दी साहित्य में इस दशक का सबसे अधिक चर्चित और विवादास्पद हस्ताक्षर है 'कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना'। उनका जन्म 6 जनवरी सन् 1932 ई० को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी नामक कस्बे में हुआ था। उनका जन्म एक टूटे और बिखरे हुए जमींनदारी वातावरण में हुआ था, इसलिए उनका प्रारम्भिक जीवन बड़ी कशमकश में गुजरा। कमलेश्वर के पिता का नाम जगदंबा प्रसाद था। जब वे बहुत छोटे थे तब पिता की मृत्यु हुई। उनके पिता ने दो विवाह किये थे। कमलेश्वर उनकी दूसरी पत्नी शान्तिदेवी का सबसे छोटा लड़ध्का है। कमलेश्वर की कोई बहन नहीं है, उनके सबसे बड़े भाई रामेश्वरी का बचपन कठिनाई में बीता। अमीर कहे जाने काले घर में गरीब की तरह उन्हें जीवन बिताना पड़ा। घर के अभावों ने उस बालक को काफी जिम्मेदार बना दिया। बड़ों के समान निर्णय लेने की क्षमता बचपन में ही उनको प्राप्त हुई। वे स्वयं कहते हैं, ''खोखले सामन्तवाद के जिस माहौल में मैं' पला हूँ, उनमें क्या क्या बुराईयाँ नहीं थी? लेकिन बचपन में ही पितृहीन हो जाने पर मुझमें एक जिम्मेदारी का एहसास भी भर दिया था।''[1]

अपने भाई सिद्धार्थ के साथ कमलेश्वर का अच्छा रिश्ता था। उनका भाई बड़ा होशियार था। परिवार का भविष्य उन पर निर्भर था। लेकिन अचानक उनकी मृत्यु हुई तो मानो सबकुछ डूब गया। भाई को लेकर जितने सुन्दर सपने देखे थे, वे अधूरे रह गए। लड़ाई का समय था। सामन्ती पर बुरी तरह ढह चुका था। कमलेश्वर की माँ घर का सारा काम संभालती थी। जिन्दगी उनके लिए एक निकट समस्या बन गयी थी। लेकिन उनमें बहुत ही हिम्मत थी। मेहनत और संघर्ष करके इनकी माँ ने परिवार का जीवनयापन किया। अभावों के बीच रहकर उनकी माँ दूसरों के अभावों को दूर करने की कोशिश करती थी। रात को सूने घर में बैठकर वह रोया करती थी। इन्हीं परिस्थितियों में यदि कमलेश्वर विद्रोही नहीं बने, तो इसका कारण उनकी माँ थी। वे कमलेश्वर को कहानियाँ सुनाया करती थी, और कहती थीं इन्हीं कहानियों को लम्बी और विस्तृत करके लिखना। उनकी माँ का वैष्णव संस्कार उन्हें विद्रोही होने से रोकते थे।

कमलेश्खर की प्रारम्भिक शिक्षा मैनपुरी में ही हुई थी। मास्टर हमेशा गुस्सा करते थे। बच्चों को पीट–पीटकर लस्त कर देते थे। स्वाभाविक रूप से कमलेश्वर की रुचि पढ़ने में से हट गगी। लड़ाई के उस जमाने में रात को पड़ने के लिए मिट्टी का तेल मयस्कर नहीं था। वे कभी नयी पुस्तकें खरीद नहीं सके। साथ के लड़ध्कों के अपने–अपने पिता–भाई के साथ दुकानों पर जाकर कोर्स की नई–नई पुस्तकों को खरीदते देखकर उनकी आँखों में आँसू भर जाते थे। अब उनको मालूम हो गया कि आदमी अकेला है तो यह दुनिया बेरहम हो जाती है। गर्मी की छुट्टियों के बाद स्कूल के खुलने पर वहाँ जाने का कोई उत्साह बालक कमलेश्वर को नहीं था। एक आने की रबर या पटरी के लिए माँ से पैसा माँगते हुए उन्हें संकोच होता था। इन सारी कठिनाईयों के बावजूद दर्जे

में वे ज्यादातर अव्वल आया करते थे। उनका मित्र दुष्यन्त कुमार के शब्दों में, ''प्रसन्न व्यथितत्व और अनायास ही अन्दर की बातें कहने वाली आंखे कमलेश्वर की पहचान है।''[2]

कमलेश्वर दसवाँ पास हो गए। वे आगे पढ़ना चाहते थे। उन दिनों वे कानपुर के छावनी के यूरोपियन इन्सिट्यूट में मैनेजर थे। लेकिन वहाँ के काम से अतृप्त होकर उस नौकरी को उन्होंने जल्दी ही छोड़ दी क्योंकि उन्हें लगा कि यह दुनिया उनकी नहीं है। दुष्यन्त कुमार के अनुसार ''कमलेश्वर अपने छोटे से कस्बे मैनपुरी से मानसिक रूप से इतना जुड़ा हुआ था कि इलाहाबाद में रहते हुए भी वहाँ की बातें सोचा करता था। हर महीने भागकर मैनपूरी जाया करता था।''[3]

कमलेश्वर ने अपने अकेलेपन से घबराकर अपने से बड़ी आयु की लड़घ्की की निकटता प्राप्त की, लेकिन दो तीन साल बाद ही इनकी प्रेमिका का विवाह किसी और से हो गया। अहम उनमें इतना अधिक था कि वे अपनी बात किसी से भी बताना नहीं चाहते थे। इस समय योगेश चट्टर्जी से उनका परिचय हुआ। फलस्वरूप पढ़ाई के साथ–साथ वे कांतिकारी समाजवादी पार्टी में काम करने लगे। उन्होंने इलाहाबाद में आकर 'जनक्रांति' अखबार में कौतिकारियों की जीवनी लिखना शुरू किया। पार्टी के दफ्तर में बैठकर तमाम पुस्तकें पढ़ते थे। अपनी असली लड़ाई को उन्होंने पहचान लिया। इस समय उनको सबकुछ मिले, लेकिन पैसे नहीं । भारत स्वतंत्र हुआ। वे जनक्रांति में लिख रहे थे। उनके मन में आदर्शों के प्रति आस्था बढ़ गयी थी। इसी बीच वे बी०ए० पास हुए। कमलेश्वर ने विज्ञान से इन्टर किया, लेकिन अपनी आदत से मजबूर होकर उन्होंने फिर आटर्स ले लिया।

कमलेश्वर असाधारण प्रतिभाशाली थे। सज्जनता के कारण मित्र उनकी ओर आकृष्ट हो जाते थे। वे बहुत सादा, सरल और शाँत थे। संघर्षो के बीच वे शांत रहते थे। कमलेश्वर बहुत संकोची थे। अपने लिए जरूरी चीजें वे स्वयं खरीदते थे। साबुन और स्याही वे खुद बनाते थे। वे इतने संकोची थे कि खाना भी भर पेट नहीं खाते थे। उनकी माँ ने उनके मित्र और सहपाठी दुष्यन्त कुमार से एक बार कहा था, ''कैलाश इतना संकोच करता है कि दुवारा रोटी तक नहीं माँगता ।... मुझे जिन्दगी में यह अफसोस हमेशा रहेगा कि मेरे बेटे ने मुझसे कभी रोटी या पैसा नहीं माँगा।''[4] ''श्री दुष्यन्त कुमार ने लिखा है, ''उसके असली व्यक्तित्व की अंदर धारा में न तो व्यंग्य है न हास्य । वह स्वभाव से अत्यन्त संवेदनशील भाव प्रवण और गम्भीर व्यक्ति है। उसका मूलभाव करुणा है, सघन पूंजीभूत करुणा।''[5]

जिस जमाने में कमलेश्वर ने लिखना शुरु किया था, और जिस संघर्ष से निकल रहे थे उसने कमलेश्वर को नितान्त अन्तर्मुखी बना दिया था। उनको मालूम था कि जिन्दगी में सब हासिल नहीं होता। उन्होंने अपने लिए साहित्य का रास्ता चुन लिया था। लड़घ्कपन का यह चुनाव उस वक्त उन्होंने भावुकता में किया था। आज वह सही साबित हो चुकी है। वे गंभीरतापूर्वक कहानी–लेखन की ओर उन्मुख हुए जहाँ उन्हें आशातीत सफलता मिली। सन् 1954 ई में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. पास किया। वे. पी.एच.डी. करना चाहते थे, लेकिन न तो उन्हें यूनिवर्सिटी की नौकरी करनी थी और न ही सरकार की। इसलिए पी.एच.डी. अधूरी छोड़कर कठिनाइघ्यों और संघर्षो भरा साहित्य का मार्ग चुना और अपने आपको सीमित कर दिया। विमल मित्र के शब्दों में, ''साहित्यकार कमवेश्वर को मैं शुरू से जानता हूँ। उनको मैं ने अनेक रूपों में देखा है, इसका एक अलग अस्तित्व है। 'सारिका' के संपादक के रूप में जब वे कलकत्ता आए तब उनके साथ मेरी बहुत ही साहित्य चर्चा हुई। बातचीत से मुझे पता चला कि हिन्दी साहित्य में तब तक जो चिन्तन चल रहा था, उसे बदल देने की उनमें शक्ति थी। इसलिए मैं कमलेश्वर को साहित्य का विद्रोही लेखक मानता हूँ। कमलेश्वर परंपरा के शत्रु है। यह साहित्य का एक शुभ लक्षण भी है। कमलेश्वर कभी एक स्थान पर स्थिर बैठ नहीं सकते। कमलेश्वर के किसी भी लेखन में पुनरावृत्ति नहीं पायी जाती। सूर्य एक होने पर भी हर रोज प्रत्येक सुबह नव–जन्म लेता है। कमलेश्वर एक लेखक होने पर भी हर लेखन में नव जन्म लेता है।''[6]

कमलेश्वर अपनी अन्तर्मुखी स्वाभाव को छोड़कर सहज मेधा द्वारा खुश दिल, खुश मिजाज और मिलनसार आदमी बन गए। अपनी विलक्षण मेधा द्वारा उन्होंने अल्यकाल में इच्छा मात्र से व्यंग्य विनोद की प्रवृति को आत्मसात् किया। मूल सत्य यह है कि उनके असली व्यक्तित्व की अन्तर्धारा में न तो व्यंग्य है, और न हास्य। वे स्वभाव से अत्यन्त संवेदनशील भाव प्रवण और गंभीर व्यथित हैं। उनका मूल भाव करुणा है जिसके कारण वे अपने व्यंग्य में भी अनुदार नहीं हो पाते। उनकी बातों से यदि किसी को चोट पहुंचती तो तुरन्त उसे भाप लेते और अवसर मिलते ही लज्जित होकर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर इस तरह प्यार से दबाते कि उनकी हथेलियों की ऊष्मा में, असली कमलेश्वर को खोज निकालने में भूल नहीं करेंगी। घोर विरोधी को भी अपने

व्यक्तित्व की सहजता, बुद्धि और अपने आँखों के विश्वास से वे पराजित कर लेते हैं। वे अहंवादी नहीं है, वे कुंठित भी नहीं है, उनमें एक सहज अपनापन है।

कमलेश्वर के लेखन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उनका जीवन–दर्शन अपने अनुभवों से बने व्यक्तित्व का सहज प्रोजेक्शन है। खुद अपने से टक्कर लेने का विशेष सामर्थ्य और मनोबल ही उनकी असाधारण सफलता का रहस्य है। वे अपने से, अपने समय की विसंगतियों से लड़ रहे थे। यही तो उनकी आदत रही है कि मन के विचारों को पहले ही उद्घ्घाटित कर देते थे और तब से उस विचार के अनुरूप क्रियान्वयन के लिए नैतिक बाध्यता अनुभव करने लगते हैं। सफलतम लेखक के रूप में कमलेश्वर की जो ख्याति है, उसके बावजूद चे ईमानदारी से अनुभव करते है कि गर्व करने लायक उन्होंने अभी कुछ नहीं लिखा है। आचरण और व्यवहार के स्तर पर वे मर्यादा का पालन करते है। लेखन में असाधारण होते हुए भी ये एक साधारण–सा आदमी है, औसत से कुछ छोटा कद और साँवला रंग। नाक, नक्शा और आँखों में आकर्षण। मीठी ज़बान। सुरुचि उनकी विशेषता है। उनका जीवन जीने का तरीका भी साहित्यिक है, जिसे उन्होंने कड़ी मेहनत, लगन और रियाज के बाद प्राप्त किया और अपनी कला के द्वारा अपने आस–पास के मामूली और निचले वर्ग के लोगों को भी ऊँचा स्थान दिला दिया। पैसा उनके पास टिकता नहीं है। वे दोस्तों के महफिलों में मिल सकते हैं. किसी बीमार के सिरहाने बैठे हुए मिल सकते हैं, किसी सस्ती–सी दुकान में चाय पीते हुए मिल सकते या बड़े होटल में नफासत से खाते हुए श्री मिल सकते हैं। वे दूसरों के दुःखों में दुःखी है और उनकी परेशानियों को सुलझाने का प्रयत्न भी करते हैं। अपने दुःखों को मन में छिपाकर दूसरों के सामने हँसने की कला उनको आती है।

कमलेश्वर ने कभी अपने को छोटा नहीं समझा। वे कभी उसे नहीं भूलते। आर्थिक संघर्ष में भी वे भावना को सर्वोपरि मानते है। एक साधारण आदमी का जीवन ही इतना विषादमय, साथ ही पवित्र हो सकता है। उन्होंने अपने लेखन के प्रारम्भ से ही सामान्य मनुष्य के दुःख–दर्द को, उसकी आकांक्षाओं, अभावों और संघर्षों को, उसकी मजबूरी और आदमियत को पकड़ने का प्रयास किया है। आम जिन्दगी से जुड़ी होने के कारण उनकी रचनाओं में वैविध्य है। पिछले 47 वर्षों से कमलेश्वर अपनी रचनाओं से हिन्दी साहित्य की अनन्य सेवा कर रहे हैं। वे मूलतः कहानीकार हैं। इन्होंने कहानी को अपने समय के साथ जोड़घ्कर उसे नयी व्याख्या और परिभाषा दी है। कहानी को विकास की दिशा देते हुए इसे आदमी के साथ जोड़ा है। कमलेश्वर ने दस उपन्यास तथा पचास से अधि ाक कहानियाँ लिखी है। जब वे विद्यार्थी थे तभी (1950) उनकी पहली कहानी अधिक 'कामरेड' प्रकाशित हुई थी। सन् 1959 ई० तक वे मैनपुरी और इलाहाबाद में रहे। सन् 1959–60 में वे दिल्ली आए। सन् 1966 तक वे दिल्ली में रहे। सन् 1966 दिसम्बर को वे दिल्ली से बंबई आए। सन् 1972 तक यहाँ रहे, पुनः दिल्ली चले गए। इस प्रकार कस्बे से नगर, महानगर पहुँचे कमलेश्वर की रचनाएँ भी परिवेश के अनुसार बदलती रहीं। उनके लिए साहित्य निरन्तर परिवर्तित होने वाली एक प्रक्रिया है। सन् 1963 से 65 ई० तक कमलेश्वर 'नई कहानियाँ' पत्रिका का संपादन करते रहे। सन् 1967 मार्च में ये 'सारिका' के संपादक नियुक्त हुए। 'सारिका' के संपादक के रूप में कमलेश्वर ने हिन्दी कहानी को सारे देश की विभिन्न भाषाओं के कहानी लेखन के साथ जोड़घ्कर एक प्रशंसनीय कार्य किया। उन्होंने मानव और साहित्य को एक–दूसरे का पर्याय मानकर अपनी साहित्य यात्रा की शुरुआत की। कमलेश्वर संपादक के रूप में तमाम नये–नये प्रगतिशील, जनवादी, परिवर्तनकामी, प्रतिबद्ध, रचनाकारों और उनकी रचनाओं से संपर्क करते रहे। उन्होंने इन रचनाकारों को जोड़–बटोरकर समान्तर आन्दोलन के रूप में उन्हें एक मंच प्रदान किया।

साहित्य, आस्थावान रचनाकारों के हाथों में सामाजिक क्रांति और परिवर्तन का अत्यन्त प्रभावी अस्त्र है। सन् 1936 में लखनऊ में हुए भारतीय प्रगतिशील लेखकों के प्रथम सम्मेलन में प्रेमचन्द ने कहा कि ''हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जो हम में गति, संघर्ष और बेचौनी पैदा करे।''[7] साहित्य, जन मानसिकता का निर्माण कर सामाजिक परिवर्तन और क्रांति के हितों की पूर्ति करता है। यही मार्क्सवादी–लेनिनवाद की स्थापना है। यही, कमलेश्वर और समस्त प्रगतिशील समान्तर लेखकों की मान्यता है। एक सच्चे वामपंथी की भाँति कमलेश्वर का दृष्टिकोण हर मामले में साफ है। साहित्यकार देश और समाज के अन्य लड़ाकू वर्णों के साथ मिलकर क्रांति की भूमिका निभाता है, अलग या अकेला नहीं, क्योंकि साहित्यकार कोई विशिष्ट जन नहीं होता, बल्कि सामान्यजन का ही एक अंग है। स्वातंत्र्योत्तर काल के कथाकारों में कमलेश्वर का एक प्रमुख नाम है। जीवन की असंगतियों के बीच ताल–मेल बैठाने वाले कमलेश्वर की कथाकृतियों में मध्यवर्ग तथा दलित पीड़ित का यथार्थ स्पष्ट रूप से उभरा

है। कमलेश्वर अपनी कहानियों में युग सत्य को उद्घ्घाटित करने में सफल हुए हैं। उनके उपन्यासों में बड़ी सूक्ष्मता और सांकेतिकता के साथ नये सामाजिक यथार्थ को निरुपित किया गया है।

कमलेश्वर वैचारिक धरातल पर मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव और मन्नू भण्डारी की रचनाओं से समानता रखते हुए भी अपनी संवेदनशीलता, अपने व्यक्तित्व के कारण सचानात्मक धरातल पर इनसे अलग हो जाते हैं। कमलेश्वर की संवेदनशीलता कस्बे से लेकर महानगर बोध की एक सम्पूर्ण यात्रा प्रस्तुत करती है। कमलेश्वर ने कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, यात्रा–विवरण और समीक्षाएँ लिखे है। इनके रचनात्मक व्यक्तित्व और मानवीय व्यवहार में अपूर्व सामंजस्य है। सामाजिक चेतना को अभिव्यक्ति देने की दृष्टि से कमलेश्वर का महत्व अधिक रहा है। इनके प्रथम संकलन 'राजा निरबंसिया' से लेकर 'बयान' तक की कहानियों का अध्ययन करने पर उनकी कला के विकास की यात्रा स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर कमलेश्वर भी यह यात्रा बाहर से भीतर, स्थूल से सूक्ष्म तक की यात्रा है। इनकी कहानियाँ वास्तविकता की जमीन को निरन्तर तोड़ती है और जीवन के विभिन्न आयामों का स्पर्श करती है।

भाषा के बारे में कमलेश्वर का विचार है, ''जनता जो भाषा बोलती है, उसे लिपि की नींव पर अलग नहीं किया जा सकता, उनकी भाषा एक है–दुःख, दर्द एक है। भाषा की एकता और लिपि की अनेकता को हमें स्वीकार करना चाहिए।''[8] कमलेश्वर की भाषा के संबंध में डॉ0 विश्वनाथ सिंह का कथन है, ''कमलेश्वर की भाषा मुंशी स्टाईल की है।''[9] अर्थात् जहाँ तक भाषा का सवाल है, कमलेश्वर प्रेमचन्द से जुड़े हुए हैं। कमलेश्वर स्वाभाव से बड़ा स्वाभिमानी हैं। उन्होंने जो पंक्तियां 'मेरा पन्ना' में लिखी है इस बात को प्रमाणित करती है कि कमलेश्वर नाम निडरता और स्वाभिमान का पर्यायवाची है जनसामान्य के हित के लिए किसी से भी टकरा सकता है। उनका कहना है, ''यह देश किसी जे पी. किसी मोरारजी, किसी चरण सिंह का नहीं है, यह धनी किसानों, पूँजीपतियों, तस्करों, साम्प्रादयिक तत्वों या आर.एस.एस. का भी नहीं है। यह देश हमारा भी है और सर्वहारा तथा जनसामान्य का भी है।''[10]

कमलेश्वर के पास निहायत यथार्थवादी हाव–भाव, प्रभावशाली व्यक्तित्व, साफ सुधरी जुबान, चरम आत्मविश्वास भरा स्वर और उसे अर्थ देने का अपना व्यक्तित्व है। कमलेश्वर व्यक्ति नहीं, कथाकार है। वह जीवन में हमेशा भागते ही रहे हैं। शांति और एकाग्रता केवल उस समय, जब कलम हाथ में हो। जीवन के प्रति कमलेश्वर का संघर्ष विरोधाभासी रहा है। यह संघर्ष सीधी और सरल नहीं है, यह विचित्र विरोधाभासों की लडाई है। वे अपने युग और अपनी पीड़ा का, सच–झूठ का सहारा लेकर चित्रित करते हैं। कमलेश्वर के मित्र दुष्यन्त के शब्दों में, ''कमलेश्वर ? कमलेश्वर सच बोल ही नहीं सकता। वह जब गम्भीर होता है, तब भी कुछ न कुछ उछालता लगता है, इसे छिपाने के लिए ढेर–सा–धुआँ नाक से निकालकर कहता है। जरा–जरा–सी बातों में और बिना वजह झूठ बोलता है। सूरत से शैतान नहीं लगता। तेज और इंटेलिजेंट लगता है। कमलेश्वर उब्बल नम्बर का झूठा है। मुँह से जब यह झूठ बोलता है, तो एक अच्छी कम्पनी होता है और कलम से बोलता है तो सफल कहानीकार।''[11]

'राजा निरंबसिया से 'कस्बे का आदमी' तथा 'एक सड़क सतावन गलियाँ' से 'रेगिस्तान' तक कमलेश्वर की कथा–यात्रा मध्यवर्गीय जीवन की सादगी, उनके उतार–चढ़ाव से शुरू होती है और महानगर की आधुनिक सचेतनाओं का प्रतिनिधित्व करती है। कमलेश्वर के लेखन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उनका जीवन–दर्शन किसी से प्रभावित न होकर अपने अनुभवों से बने व्यक्तित्व का सहज प्रस्तुतीकरण है। उनकी असाधारण सफलता का रहस्य है खुद अपने से टक्कर लेने का सामर्थ्य और मनोबल। तमिल तथा हिन्दी के विख्यात लेखन शौरि राजन के शब्दों में, ''कमलेश्वर के पास वर्तमान का सही बोध है, अतीत के बारे में अड़िग धारणा है, भविष्य के प्रति निर्णायक स्थान है। उनका हर कदम नयापन और मिसाल पेश करते हैं। वे एक और अबूझ पहेली है, तो दूसरी ओर साफ पन्ना भी है। उनका हर बर्ताव अगल–बगल के लोगों की भली–बुरी हरकतों का पुख्ता जवाब है।''[12]

कमलेश्वर का कुंटुंब जीवन बिलकुल आनन्दपूर्ण है। उनकी पत्नी गायत्री भी कहानी लिखती है। उनकी एक ही बेटी है जिसका नाम है ममता। उसकी शादी हो चुकी है। वह एक अध्ध्यापिका है।

कृतित्व के विविध आयाम

कमलेश्वर उपन्यास के क्षेत्र में

कमलेश्वर नये उपन्यासकारों की उस पीढ़ी के लेखक है, जिन्होंने जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल और इलाचन्द्र जोशी की रुढ़ कथा–संचेतना को नवीन और स्वास्थ सामाजिक भूमि देने की चेष्टा की है। इन उपन्यासकारों की तुलना में कमलेश्वर के उपन्यासों के पात्र सहज और स्थिर जीवन बिताने के प्रयास में जुटे हुए हैं। उनके उपन्यासों में मानव मन का प्राधान्य रहता है। उनका चिन्तन जनवादी चिन्तन है, जन सामान्य के सुख–दुःख से निहित होता है।

कमलेश्वर के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण आयाम उनके मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में उद्घ्घाटित हुआ है। परिवर्तित परिवेश और पात्रों की मानसिकता के परस्पर टकराव में उपन्यास का मनोवैज्ञानिक रूप उभरकर विकसित होता है। उनके उपन्यासों में मध्यवर्ग का यथार्थ स्पष्ट रूप से उभरा है। दिल्ली के कमरे में घूटती' पति–पत्नी, अपने अकेलेपन से असुरक्षित पात्र, अपने विघटित परिवार के साथ सामंजस्य उत्पन्न करते हुए श्यामलाल, सफलता की दौड़ में भागती हुई मालती, कमलबोस और प्रशान्त सभी इसके उदाहरण है। मध्यवर्गीय पात्रों की मानसिकता का चित्रण कमलेश्वर के उपन्यासों का मूल कथ्य है। अपने समकालीनों की तुलना में इनके उपन्यास सामाजिक जागरुकता से और पात्रों की सूक्ष्म मानसिकता को पकड़ने में अधिक प्रेरित है। उपन्यास के क्षेत्र में एक व्यक्ति और साहित्यकार के रूप में कमलेश्वर को आशातीत सफलता मिली। आम आदमी की जिन्दगी को और उसकी विसंगति को उन्होंने अपने अन्दाज में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। डॉ0 सुरेश सिंह के शब्दों में, ''कमलेश्वर के उपन्यासों की एक प्रमुख विशिष्टता उनकी साफ सुथरी भाषा का प्रवाह एवं यथार्थता है। चित्रात्मक भाषा संजोना एवं वातावरण का यथार्थ निर्माण करने में वे पूर्ण सफल रहे हैं। आसपास के परिचित परिवेश के छोटे–छोटे बयौर रेशे भी उनकी सूक्ष्म दृष्टि से छूटने नहीं पाये हैं। सामाजिक दायित्व का निर्वाह एवं सोदेश्यता उनके उपन्यासों की दूसरी प्रमुख विशेषता है।''[13]

लघु उपन्यासों की दिशा निर्दिष्ट करने में कमलेश्वर का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। युग सत्य और युग बोध ा की यही अभिव्यक्ति इस कलाकार ने अपनी रचनाओं में दी है। इसके समकालीन कथाकार राजेन्द्र यादव ने ठीक ही लिखा है, ''कमलेश्वर अपना सच नहीं बोल सकता, मगर अपने युग और अपनी पीढ़ी का सच जरूर बोल सकता है। उसके पास जुबान है और उसे बात करनी भी आती है, क्योंकि इसी समय सच पर आकर बड़े जुबानदार लोग चुप हो जाते हैं।''[14]

डॉ0 धनश्याम मधुप के शब्दों में, ''कमलेश्वर ने अपने लघु उपन्यासों में कुंठाग्रस्त परिस्थितियों, मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों तथा चौन की विकृतियों का उलझाव उत्पन्न नहीं किया। जीवन के यथार्य को सहज प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के कारण ही पाठक को अन्त तक पहुंचाकर कुछ सोचने पर मजबूर होना पड़ता है।''[15]

कमलेश्वर के उपन्यासों में अनावश्यक विस्तार नहीं है। उनके उन्यास आकार में छोटे होते हुए भी वस्तु की प्रकृति के कारण विस्तृत प्रतीत होते हैं। उनके उपन्यासों का मार्ग जीवन से साहित्य की ओर है। एक सड़क सतावन गलियाँ, डाक बंगला, तीसरा आदमी, समुद्र में खोया हुआ आदमी, काली आँधी, आगामी असीत, वहीं बात, लौटे हुए मुसाफिर, सुबह......दोपहर.....शाम और रेगिस्तान कमलेश्वर की औपन्यासिक यात्रा के दस पड़ाव है।

कमलेश्वर के उपन्यास

एक सड़घ्क सत्तावन गलियाँ

सन् 1956 में प्रकाशित कमलेश्वर का प्रस्तुत प्रथम उपन्यास प्रकाशक की भूल के कारण 'बदनाम गली' नाम से प्रकाशित था। सवा सौ पृष्ठों में लिखित यह उपन्यास लघु होने के बावजूद विस्तार में बड़ा है। सरनाम सिंह, रंगीले, बंसिरी, शिवराज, बाजा मास्टर, कमला आदि इसके प्रमुख पात्र है। इसकी कथा मैनपुरी में घटित होती है। स्वातंत्र्योत्तर पूर्व की कस्बाई जिन्दगी का बड़ा ही संघन एवं संवेदनात्मक चित्रण इसमें है। वहाँ के लोगों के दुःख–दर्द, आशाएँ, निराशाएँ इसमें निहित है। उपन्यास का नायक सरनाम सिंह है। सरनाम सिंह, रंगीले और शिवराज खंडित व्यक्तित्व को लिए हुए है। सरनाम और बंसिरी ठेके चरित्रों की सर्जना लेखक ने अनूठे ढंग से की है। लोहे से कठोर बाह्य व्यक्तित्व के भीतर दोनों के मन मक्खन से अधिक कोमल है। उपन्यास में निम्न वर्गीय समाज के आर्थिक, सामाजिक एवं वैयक्तिक जीवन का सजीव चित्र है। लेखक ने अपने प्रगाढ़ अनुभव और संवेदनाजन्य अनुभूतियों के आधार पर इसकी कथा लिखी है। भाषा की दृष्टि से 'एक सड़क सतावन गलियाँ' एक समर्थ और उच्चकोटि का उपन्यास है। संवादों में व्यंजना देखने योग्य है। आदमी में जितनी भी तरह की अच्छाइयाँ और बुराईयाँ हो सकती है, उसके भीतर की घृणा और प्रेम, हिंसा और अहिंसा आदि भावों को तीव्रतम

ढंग से इसमें अभिव्यक्ति मिली है। कमलेश्वर अपने पात्र सरनाम सिंह द्वारा जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं, ''सब जीने के लिए मर रहे हैं' मालिक और मजदूर, वकील और महरिर, दुकानदार और नौकर, सभी एक ही नाव में हैं और उस नाव के चारों ओर एक तरह का तूफान उमड़ रहा है।''16 कुल मिलाकर कमलेश्वर का यह प्रथम उपन्यास एक सफल कृति है।

डाक बंगला—

सन् 1959 में प्रकाशित कमलेश्वर का दूसरा उपन्यास है डाक बंगला। इसमें लेखक ने 'इरा' नामक युवती की आप—बीती को आत्म—कथानक शैली में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। इरा मध्यवित्तीय परिवार की लड़की है जिसने अपने जीवन में अनेक उतार—चढ़ाव देखे, अच्छे और बुरे से होकर गुजरी और वह हर जगह हारती—जीतती हुई आगे बढ़ी है। इरा विधवा युवती है, वह डाक बंगले में ठहती हुई है, उसने अपनी टूटी हुई जिन्दगी की अनुभूतियों को अनेक संकेत और बिंबों द्वारा अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत उपन्यास के बारे में डॉ० वीरेन्द्र सक्सेना का कथन है, ''जहाँ तक अनुभूतियों का प्रश्न है, विशेषकर नारी जीवन की तृषिद और कष्टदायक अनुभूतियों का 'डाक बंगला' अपने आप में एक उपलब्धि है क्योंकि इसमें एक असाधारण नारी 'इरा' के माध्यम से एक असाधारण नारी की विपत्ति और उसके आभ्यंतरिक एवं बाहय संघर्ष को रूपायित किया गया है।'[17] इरा ने जीवन में चार पुरुषों से प्रेम किया है लेकिन कोई भी उससे ईमानदारी नहीं दिखायी। इरा पुरुष के सहारे जीना चाहती है, चाहे वह पति हो, भाई या बाप। आर्थिक संघर्ष के कारण इरा को जीवन—विषमताओं से गुजरनी पड़ती है, जीवन की सार्थकता बहुत दूर चली जाती है, जिसे पकड़ पाना संभव नहीं है। उसकी असुरक्षा और अकेलापन की भावना, अचेतन में उसे कुंठित करती है। इरा की मनःस्थिति का संबंध जटिल और संकुचित सामाजिक व्यवस्था से जुड़ा हुआ है जो दूसरे उपन्यासों से भिन्न है।

लौटे हुए मुसाफिर

देश विभाजन को लेकर सन् 1961 में लिखा गया कमलेश्वर के प्रस्तुत लघु उपन्यास में भारत—पाकिस्तान बँटवारे की भीषणता को, खून—खराबी को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। यह एक ऐसी रचना है जिनमें निम्न वर्ग और शहरी जीवन को चित्रित किया है। वे लोग जो आजादी की लड़ाई में साथ लड़े थे, बंटवारे से एक दूसरे के दुश्मन हो जाए। डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना के शब्दों में, ''इस उपन्यास की विशेषता यह है कि यह केवल किन्ही दो—चार पात्रों की दुःख भरी कहानी मात्र नहीं रह जाती, अपितु एक पूरे समुदाय की परिस्थितिजन्य यातनाओं को प्रस्तुत करने वाली रचना के रूप में सामने आती है।''[18] देश के बँटवारे के साथ लोगों के दिलों में खाइयाँ चौड़ी होती गयी। सतार, सलमा, बच्चन, नसीबन, जैसे लोग देश बँटवारे में शहीद हो गए। डॉ0 सुरेश सिंह ने इस उपन्यास के बारे में कहा है, ''लौटे हुए मुसाफिर' में आस्था, आत्मविश्वास, कर्तव्यपरायणता, देशानुराग एवं दायित्व निर्वाह का जो उन्होंने महान संदेश दिया है, वह आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इसीलिए इस पीढ़ी के प्रकाशित उपन्यासों में कमलेश्वर का यह उपन्यास विशेष उल्लेखनीय होता है।''[19]

तीसरा आदमी

सन् 1960 में रचित 'तीसरा आदमी' नामक लघु उपन्यास में कमलेश्वर ने मध्यवर्गीय परिवार के दाम्पत्य जीवन का चित्रण अंकित किया है। यह बिलकुल सीधी—सादी और अत्यन्त सहज शैली में लिखा हुआ उपन्यास है। नरेश, चित्रा, समन्त आदि इसके प्रमुख पात्र है। नरेश का विवाह चित्रा से हुआ। नरेश रेडियों के 'अनाउन्सर' है जो सुमन्त के साथ दिल्ली में रहता है। चित्रा भी उनके साथ थी। नरेश का एक तीसरे आदमी के शक के कारण वैवाहिक जीवन टूट जाता है। इस उपन्यास की बड़ी विशेषता यह है कि पति—पत्नी के बीच किसी तीसरे आदमी के आने की प्रचलित कहानी को लेखक ने एक ऐसा सामाजिक एवं आर्थिक आयाम प्रदान किया है जिससे यह उपन्यास मध्यवर्गीय दाम्पत्य की ऊँच—नीच का एक प्रामाणिक दस्तावेज बन जाती है। मध्यवर्गीय परिवारों के संस्कारों, कुण्ठाओं और आर्थिक असमर्थताओं का स्वाभाविक एवं सशक्त चित्रण इस उपन्यास में उपलब्ध है। उपन्यास के संबंध में डॉ० घनश्याम मधुप का कथन है, ''तीसरा आदमी के रूप में लेखक का यह लघु उपन्यास वर्तमान आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर मध्यवर्गीय व्यक्ति की चेतना के बदलते हुए स्वरूप का चित्र है।''[20] कमलेश्वर अपने उपन्यास द्वारा हमें याद दिलाते हैं कि विवाह व्यक्ति को समाज की ओर ले जाने वाली पवित्र क्रिया है, किन्तु जब यह क्रिया कहीं भंग हो जाती है तो व्यक्ति भी टूट जाता है। वह अपने प्रति और समाज के प्रति अपने सभी दायित्वों को भुला देता है। आत्म—कथात्मक शैली में लिखा गया प्रस्तुत उपन्यास

काफी हद तक सफल कहा जा सकता है।

समुद्र में खोया हुआ आदमी

सन् 1965 में लिखा गया कमलेश्वर का 'समुद्र में खोया हुआ आदमी', नामक उपन्यास उनके सफल कृतियों में एक है। स्वयं कमलेश्वर ने इसके बारे में लिखा है, ''यह उपन्यास आजादी के बाद के भारत का उपन्यास है। कथात्मक स्तर पर यह एक टूटते हुए परिवार की कहानी है। बेरहम महानगर में धीरे–धीरे टूटते हुए परिवार की करुण गाथा।''[21]

आधुनिक जीवन की सामान्य सुविधाओं के लिए लालायित हुए व्यक्ति बड़े नगर की ओर भाग रहा है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण है, भविष्य की अनिश्चिन्तता। कल के बारे में आदमी को कोई पता नहीं है। महानगर में आकर हर व्यक्ति अकेला हो जाता है और अपने अस्तित्व तथा सार्थकता की खोज करता है। यहाँ सबसे महत्वपूर्ण स्थान मशीनों का है। पारिवारिक संबंध बदल जाता है। उपन्यास का नायक श्यामलाल पीड़ित मध्यवर्गीय परिवार के प्रतिनिधि है। रम्मी, तारा, समीरा, वीरन, हरवंश आदि कथा पात्रों द्वारा कथा का चयन किया गया है। इस उपन्यास के द्वारा कमलेश्वर भारत के परिवारमूलक समाज की ओर संकेत देते हैं। बीरन वास्तव में सब युवा पीढ़ियों के भविष्य का प्रतीक है जो समुद्र में खो जाता है। श्यामलाल का परिवार समाज का प्रतीक हैं। इस उपन्यास में जीवन संघर्षो का चित्रण बड़े पैमाने पर हुआ है।

काली आँधी

व्यक्तिगत और सामाजिक, दो भिन्न स्तरों पर एक साथ इस लघु उपन्यास का कथाचक्र चलता है। 'काली आँधी' एक ओर असफल दाम्पत्य की करुण कहानी है। इस रचना में लेखक ने मालती और जग्गी बाबू के माध्यम से उन्हीं के प्रश्नों और स्थितियों पर प्रकाश डाला है। जग्गी बाबू और मालती पति–पत्नी है। मालती उस पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतीक है जो अपने हित और स्वार्थ के लिए आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्ग का शोषण करती है। प्रस्तुत उपन्यास के शब्द–चयन के बारे में डॉ० वीरेन्द्र सक्सेना का कथन है, ''कमलेश्वर के पास सही शब्दों में सही बात कहने की जो कला है, वह स्थान–स्थान पर उपन्यास में भी उजागर हुई है तथा इसे पढ़ते हुए ऐसा कहीं भी नहीं लगता कि लेखक को अपनी बात पेश करने के लिए उचित शब्द नहीं मिले।''[22]

'काली आँधी' में हमें वह देश देखने को मिलता है जो स्वाधीन तो हो चुका है किन्तु जिसकी आन्तरिक राजनीति के अनेक पहलू है। उसका अत्यन्त यथार्थवादी चित्रण लेखक ने किया है। मालती राजनीति में प्रवेश करती है और उसका प्रवेश ही उसे बहुत बड़ी सफलता देती है। इस क्षेत्र में प्रवेश करने के पश्चात असफलता क्या है, यह मालती ने कभी जाना ही नहीं। जिस क्षेत्र में उसने हाथ डाला, उसे यश ही मिला। लेकिन अपने कौटुंबिक उत्तरादायित्व का निर्वाह करने में वह असफल हुई। उसे अपनी बेटी और पति से भी अलग दोना पड़ा। इसके विपरीत उसके पति जग्गी बाबू व्याभिमानी है। इसलिए दोनों के बीच तनाव दिन प्रति दिन बढ़ता ही जाता है। मालती के बदलते हुए जीवन को देखते हुए जग्गी बाबू को यह एहसास होता है कि राजनीति अत्यन्त घृणास्पद, स्वार्ययुक्त और झूठी होती है। कमलेश्वर ने इस रचना में अत्यन्त तीखी और व्यंग्यात्मक भाषा के द्वारा भारत में सर्वत्र व्याप्त घिनौनी राजनीति पर करारा आघात किया है। 'काली आँधी' उपन्यास में मानवीय संवेदना को अत्यन्त सशक्त शब्दों में सुक्ष्मता से रुपायित किया गया है।

आगामी अतीत

आगामी अतीत में कमलेश्वर ने उन व्यक्तियों की जिन्दघ्गी का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है जिनकी आमतौर पर उपेक्षा होती है। आज की सामन्तवादी और पूँजीवादी सामाजिक व्यवस्था को, गलत और घातक तरीकों को सफलता कैसे मिलती है इसका चित्रण आगामी अतीत में है। कमलबोस इसका नायक है। प्रशान्त, चन्दा, चाँदनी आदि प्रमुख पात्र है। कमलबोस ने अनेक उचित, अनुचित और सही गलत मार्गों को अपनाकर अभूतपूर्व यश और कीर्ति प्राप्त की। काली आँधी की नायिका की भाँति कमलबोस भी पूँजीवादी व्यवस्था की गलत महत्वघ्काँक्षाओं का शिकार हुआ। वह अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए निरन्तर प्रयनशील है। लेकिन अन्त में उसे इसकी पड़ी कीमत चुकानी पड़ी। उसे अपने ही लोगों को खोना पड़ा। उसमें वापस आने की चाह है, पर कुछ भी करने में वह असमर्थ है। प्रस्तुत उपन्यास में चाँदनी के रूप में जिस नारी पात्र का चित्रण कमलेश्वर ने किया है वह निस्संशय प्रशंसनीय है। डॉ0 वीरेन्द्र सक्सेना के शब्दों में, ''आगामी अतीत नामक उपन्यास की एक अन्य विशेषता यह है कि यह हमारे समक्ष चाँदनी जैसा जीवन्त और जीवन्त–भरा नारी पात्र प्रस्तुत कर सका है।

वस्तुतः चाँदनी का चरित्र एक ऐसा चरित्र है जो दूसरे किसी भी हिन्दी उपन्यास में देखने को नहीं मिलता और आश्चर्य इस बात का है कि कमलेश्वर ने उसे अपने व्यक्तित्व कौशल से बिलकुल संजीव रूप में उपन्यास के पृष्ठों पर खड़ा कर दिया है।'[23] तनावपूर्ण घटनाओं से ओत–प्रोत 'आगामी अतीत' कमलेश्वर के सफल उपन्यासों में एक है।

यही बात

'वही बात' में कमलेश्वर ने एक इंजीनियर के वैवाहिक जीवन की कहानी को अंकित किया है। रोमान्टिकता को तोड़कर जिन्दगी को यथार्थ के धरातल पर ला पकड़ना कमलेश्वर की विशेषता है जो इस उपन्यास में व्यक्त है।

इस उपन्यास के प्रमुख पात्र है, प्रशांत, नकुल, समीरा और टोमी नामक कुत्ता। चीफ इंजीनियर प्रशान्त के वैवाहिक जीवन में तालमेल नहीं रह पाता। बाद में प्रशान्त से तलाक कर समीरा ने नकुल से ब्याह किया। चीफ इंजीनियर प्रशान्त फिर भी काम में जुड़ा रहता है।

सुबह... दोपहर.....शाम

स्वतंत्रता आन्दोलन के आधार पर लिखा गया कमलेश्वर का एक प्रमुख उपन्यास है, सुबह... दोपहर...शाम। इसमें शान्ता नामक एक आदर्श भारतीय नारी का चित्रण किया गया है। प्रवीन, नवीन, मंजू बड़ी दीदी आदि इसके प्रमुख पात्र है। बड़ी दादी के पति विदेशियों के विरुद्ध लड़ते–बड़ते शहीद हो गये। लेकिन बड़ी दादी का विश्वास है कि उसके पति अब भी जिन्दा है, किसी जंगल में निवास करता है, क्योंकि वह जंगल से लापता हो गया था। वह अपने पति के आदर्श पर अटल हो कर रहती है। बड़ी दादी अपने पोते की अंग्रेजी नौकरी से रुष्ट होकर घर से निकलकर जंगल में रहती है जहाँ उसके पति की आत्मा होगी। मरते समय दादी अपने पोते की बेटी शाँता से कहा कि बड़े दादा के आदर्शों का पालन करना उसका कर्तव्य है। शांता की शादी अंग्रेजी नौकरी करने वाला प्रवीण से होती है। उसका भाई नीवन अंग्रेजों के विरुद्ध लड़के रहा है। पुलिस उसकी तलाश करती है। प्रवीन अपने भाई के कामों से नफरत करता है। लेकिन भाभी शांता उसका समर्थन करती है। वह देवर को कई बार पुलिस से बचाती है। अन्त में इन्सपेक्टर उसे पकड़ता है लेकिन भाभी की सहायता से वह इन्सपेक्टर का वध करता है। अपने उपन्यास के माध्यम से कमलेश्वर कहते हैं कि भारतीय नारी के हाथों में भी ताकत है, वह देश का ऐश्वर्य है।

रेगिस्तान

कमलेश्वर का यह ताजा उपन्यास गाँधीजी के सपने पूरा न होने की मार्मिक कहानी हैं। गाँधी जी की राय थी कि देश सारे लोगों में एकता बढ़ने के लिए राष्ट्रध्भाषा हिन्दी को देश के चारों ओर फैलाना है। उनकी मृत्यु के बाद इस आदर्श को कायम करने के लिए विश्वनाथ हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए निख्तर कर्मरत रह गया। वह लौकिक जीवन को छोड़ा। वह दक्षिण भारत के लोगों को हिन्दी सिखाने के लिए अनेक योजनाएं बनायी। अन्त में उसे मालूम हो गया कि अपना सारा परिश्रम विफल है क्योंकि भारत के लोग अंग्रेजी सीखना पसन्द करते है। इस प्रकार गाँधी जी और विश्वनाथ का सपना अधूरा रह जाता है। कमलेश्वर यहाँ स्पष्ट करते हैं कि आज भारत में अंग्रेजी संस्कार हावी हो गया है, लोग उसका अनुकरण कर रहे हैं।

कमलेश्वर–कहानी के क्षेत्र में

कमलेश्वर की कहानियाँ बदली हुई और बदलती हुई है। अभिव्यक्ति पर लगातार परिवर्तन कमलेश्वर की कहानियों की विशेषता है। उन्होंने समकालीन कथा चेतना को सार्थक मोड़ दिया है। उनके अनुसार कहानीकार, व्यक्ति और समाज की चिन्ताओं के साथ ही संबंद्ध होता है। वे कहानी को निरन्तर परिवर्तित होने वाली एक निर्णय केन्द्रित प्रक्रिया मानते हैं। 'मेरी प्रिय कहानियाँ' की भूमिका में उन्होंने अपना मत प्रकट किया है, ''मेरे लिए कहानी निरन्तर परिवर्तित होने वाली एक निर्णय केन्द्रित प्रक्रिया है।'[24]

डॉ0 सुरेश सिंह के शब्दों में, ''नवीन मूल्यान्वेषण, प्रयासहीन शिल्प, प्रभावशाली भाषा, सजग सामाजिक चेतना, प्रगतिशील मानदण्ड एवं सोउद्देश्यता कमलेश्वर की कहानियों की प्रमुख विशेषता है।''[25] उनकी कहानियाँ अपने परिवेश की आवाजों को स्वर और दिशा देने का दायित्व निभाती है। कमलेश्वर की पहली कहानी है कामरेड। उनके अनुसार, ''नई कहानी आग्रहों की कहानी नहीं हैं, प्रवृत्तियों की हो सकती है। उसका मूल श्रोत है, जीवन का यथार्थ बोध। इस यथार्थ बोध को ले चलने वाला वह विराट मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग जो अपनी जीवन शक्ति

से आज के संकट को जाने अनजाने झेल रहा है।'[26]

कस्बे का आदमी लेकर' 'इसे अच्छे दिन' (कहानी संग्रह) तक की कथा यात्रा में यह स्पष्ट है कि कमलेश्वर मामूली आदमी की स्थिति और संवेरना को, उनकी चारित्रिक गहनता, अनुभूति, क्षमता और सहज ज्ञान को सफल ढंग से पाठकों के समक्ष रखने में सक्षम है। श्री रामदरश मिश्र के अनुसार, ''कस्बे का आदघ्मी की कहानियों में सामाजिक विसंगतियों विद्रूषताओं और क्रूरताओं के बावजूद एक तरलता है, जीवन की सहनीयता का एक भाव है, जीवन की सहजता की खोज की तड़प है।''[27] 'राजा निरबंसिया' कटु यथार्थ को समर्थ अभिव्यक्ति देती है। यह उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में मध्यवर्गीय सामान्य व्यक्ति की आर्थिक और दाम्पत्य मूलक तकलीफों का गहरा तनाव लक्षित होता है। डॉ0 धनंजय वर्मा ने अपने एक लेख में इनकी कहानी यात्रा के संबंध में लिखा है, ''वे अपनी परंपरा और परिवेश बोध के प्रति, परिवर्तित सामाजिक सन्दर्भ और यथार्थ के प्रति, फिर रूप और शिल्प के प्रति जागरुक रहे है।''[28]

राजा निरबंसिया नामक कथा संग्रह की अन्य सशक्त कहानियाँ है, देवा की माँ, सुबह का सपना, पानी की तस्वीर आदि। पुत्र देवा बेकार है, जो अपनी बेकारी और अनियमितयों से माँ को परेशान करता है। 'सुबह का सपना' अपने प्रभाव में एक विशिष्ट मानवीय फलक पर फैल जाने वाली कहानी है। लेखक ने इसमें युद्ध की क्रूरता और उससे टकराती–शांति को बिंबित किया है। नई कहानी के प्रवर्तक कमलेश्वर ने नई कहानी की भूमिका में लिखा है, ''साहित्यिक कहानी की बात विशेषतः उन लेखकों द्वारा उठाई गई है, जो हिन्दी की ही नयी कविता के क्षेत्र में उदित हो रहे हैं. या कुछ स्वीकृति प्राप्त कर चुके हैं।'[29] कमलेश्वर ने राजा निरबंसिया में जो प्रयोग किया था– लोक कथा और वर्तमान जीवन को आमने–सामने रखकर नया बोध और मार्मिकता पैदा करने का उसकी काफी सराहना हुई थी।''[30]

विकासक्रम की दृष्टि से कमलेश्वर की कहानियों को चार दौर में विभाजित कर सकते हैं–

पहली और मैनपुरी–इलाहाबाद में 1952–59 के बीच रची हुई कस्बाती परिवेश का चित्र प्रस्तुत करने वाली कहानियाँ है। इन कहानियों में लेखक अपने कथा श्रोतों की पहचान करने का और अपने परिवेश में जीने का प्रयास करते हैं। इनमें उन्होंने जिन्दगी से आए पात्रों को रेखांकित किया है। उन्होंने लिखा है, ''.....जिन्दगी से आए पात्रों के निर्णयों को मैंने रेखांकित किया है। जीवन और परंपरागत मूल्यों के प्रति पात्रों की असहमति ही मेरी–असहमति है। 'राजा निरबंसिया' और 'देवा की माँ' इसी आधारभूत निर्णय की कहानियाँ है।''[31] प्रथम दौर की उनकी कहानियाँ है– राजा निरबंसिया, देवा की माँ, आत्मा की आवाज, कस्बे का आदमी, अकाल आदि।

कमलेश्वर की कहानियों का दूसरा दौर सन् 1959 में शुरु होकर सन् 1966 में समाप्त होता है। इस दौर में वे व्यक्ति के दारूण और विसंगत संदर्भों को समय के परिप्रेक्ष्य में अनुभव के समय–संगत संदर्भ में समझने का प्रयास करते हैं। इस दौर की शुरुआत 'जार्ज पंचम की नाक' और 'दिल्ली में एक मौत' से शुरु होती है और अन्त 'माँस का दरिया' और युद्ध कहानियों से। कुछ मुख्य कहानियाँ हैं, खोयी हुई दिशाएँ, पराया शहर, तलाश, जो लिखा नहीं जाता, अपने देश के लोग आदि।

सन् 1966 के अन्तिम महीने में कमलेश्वर दिल्ली आए। यहीं उनकी कहानियों का तीसरा दौर होता है। महानगरीय सभ्यता को अधिक निकटता से जान लेने का अवसर उन्हें इस दौर में मिला था। यह दौर उनके कथा लेखन की यातनाओं के जंगल से गुजरते मनुष्य साथ और समान्तर चलते का और है। कमलेशर ने लिखा है, ''यातनाओं के जंगल से गुजरते मनुष्य की इस महायात्रा का जो सहयात्री है, वहीं आज का लेखक है। सह और समान्तर जीने वाला, सामान्य आदघ्मी के साथ।''[32] इस प्रकार समान्तर चलने के बाद ही कोई भी लेखक अभिव्यक्ति के प्रति प्रमाणिक रह सकता है। वह पात्रों की मनःस्थिति को खुद जीना चाहते हैं। उसकी यातनाओं के साथ समान्तर चलना चाहता है। इस दौर की मुख्य कहानियाँ हैं–जोखिम, बयान, मानसरोवर के हंस, नागमणि, या कुछ और, लड़ाई आदि।

कमलेश्वर की कहानियों का अन्तिम दौर सन् 1972 के बाद की कहानियाँ है। 'कितने पाकिस्तान' ऊपर उड़ता हुआ मकान, इतने अच्छे दिन, रातें आदि इस समय की मुख्य कहानियाँ है। इस तरह 'राजा निरबंसिया' से लेकर 'इतने अच्छे दिन तक के कथाकार कमलेश्वर का रचनात्मक विकास अपने समय और लोगों से अंतरंगता से जुडे हुए लेखक का गौरवशाली विकास है। ये कहानियाँ कमलेश्वर को अपने युग के अग्रणी कथाकार के रूप में स्थापित करने के साथ–साथ आम के सामान्य जन की समूची तकलीफ को सम्यक स्वयं भी देती है। डॉ.

परमलाल गुप्ता ने लिखा है– ''वर्तमान सामाजिक व्यवस्था एवं परिवेश में मनुष्य के चरित्र, उसकी पीडा और टूटते–बिखरते रिश्तों के चित्र कमलेश्वर की कहानियों में प्राप्त होते हैं।

कमलेश्वर की अन्य रचनाएँ

लेखक ने 'नयी कहानी की भूमिका' 'नई कहानी के बाद' तथा 'मेरा पन्ना' नामक तीन आलोचनात्मक ग्रन्थ प्रकाशित किए है। उनका लिखा हुआ यात्रावृत्त है, कश्मीर रात के बाद और देश–देशांतर'। 'अधूरी आवाज' उनका नाटक है। कमलेश्वर ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'नष्टनीड' का हिन्दी रूपान्तर किया है जिसका नाम है, 'चारुलता'। उन्होंने प्रेमचन्द का गोदान, गवन, निर्मला आदि उपन्यासों के नाघ्म रुपान्तर भी किया है। बच्चों के लिए चार संगहों का एक नाटक भी लिखा है, जिसका नाम है, 'बाल नाटक'। सन् 1995 में कमलेश्वर की आत्मकथा 'जो मैंने जिया' भी प्रकाशित हुई है।

कमलेश्वर की रचनाओं में आधुनिक संचेतना पूर्ण रूप से उभरकर सामने आई है जिसमें रूढ़ियों के प्रति निष्ठा है, विद्रोह भी है जो नवीन मूल्यों की स्थापना करने वाली है। आधुनिक जीवन की विसंगतियों, अलगावों, उत्पीडनों, निराशाओं, निष्क्रियताओं, लक्ष्यहीनताओं का चित्रण अधिक किया गया है। उनकी रचनाओं में सरल, संक्षिप्त, सुबोध एवं स्वाभाविक संवादों का प्रयोग हुआ है, रोजमर्रा जीवन में प्रयुक्त बोलचाल को अपनाया गया है। उनमें पात्रानुकूलता है, वो पात्रों की मनःस्थिति एवं अन्तर्द्वन्द्व के वाहक है। उन्होंने प्रायः मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग के ऐसे ही पात्रों का चरित्र–चित्रण अधिक किया है, जो आस्थावादी है। इनमें जीवन की वास्तविकताओं से जूझने की शक्ति है, जो आर्थिक रूप से विपन्न परिस्थितियों में जकड़े एवं रुढ़ियों में फँसे हुए है। कमलेश्वर ने मुख्यतया काल्पनिक कथानकों को यथार्थवादी परिवेश में वक्त किया है। उनकी भाषा प्रवाहमयी है जो कृत्रिमता से सर्वथा परे है।

सन्दर्भ–

1. कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियों की भूमिका, राजेन्द्र यादव, पृ. 13.
2. मधुकर सिंह, कमलेश्वर पृ. 68.
3. मधुकर सिंह, कमलेश्वर पृ. 90.
4. आइघ्ने के सामने, कमलेश्वर, पृ. 8.
5. मधुकर सिंह, कमलेश्वर पृ. 89.
6. आइने के सामने, कमलेश्वर पृ.10.
7. साहित्य और समाज, प्रेमचन्द पृ. 8.
8. मेरा पन्ना, कमलेश्वर, पृ.5.
9. कहानीकार कमलेश्वर, संदर्भ और प्रकृति, सूर्यनारायण माणिकराव सुभे, पृ.185.
10. मेरा पन्ना, कमलेश्वर, पृ. 8
11. मेरा हमदम मेरा दोस्त, कमलेश्वर, पृ. 9.
12. मधुकर सिंह, कमलेशर, पृ. 368–69.
13. हिन्दी लघु उपन्यास, नरेन्द्र चतुर्वेदी, पृ. 222.
14. कमलेशर की श्रेष्ठ कहानियाँ, राजेन्द्र यादव, पृ. 200त्र.
15. हिन्दी लघु उपन्यास, नरेन्द्र चतुर्वेदी, पृ. 22.
16. एक सड़क सतावन गलियाँ, कमलेश्वर, पृ.104.
17. मधुकर सिंह, कमलेश्वर, पृ. 183.
18. हिन्दी लघु उपन्यास, नरेन्द्र चतुर्वेदी, पृ. 238.
19. हिन्दी लघु उपन्यास, नरेन्द्र चतुर्वेदी, पृ. 238.
20. हिन्दी लघु उपन्यास, नरेन्द्र चतुर्वेदी, पृ. 241.
21. समुद्र में खोया हुआ आदमी, प्रकाशक की प्रस्तावना से, पृ. 9.

22. हिन्दी लघु उपन्यास, नरेन्द्र चतुर्वेदी, पृ. 236.
23. हिन्दी लघु उपन्यास, नरेन्द्र चतुर्वेदी, पृ. 234.
24. मेरी प्रिय कहानियाँ – भूमिका, कमलेश्वर, पृ. 6.
25. कहानीकार कमलेश्वर, संदर्भ और प्रकृति, सूर्यनारायण सुभे, पृ.139.
26. नयी कहानीः दशाः दिशाः संभावना, पृ. 93.
27. हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान, रामदरश मिश्र, पृ.164.
28. मेरी प्रिय कहानियाँ भूमिका, कमलेश्वर, पृ. 6.
29. नई कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, पृ. 37.
30. कुछ कहानियाँः कुछ विचार, डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, पृ.103.
31. मेरी प्रिय कहानियाँ– भूमिका, कमलेश्वर, पृ. 6.
32. मेरी प्रिय कहानियाँ भूमिका, कमलेश्वर, पृ. 6.
33. परमलाल गुप्ता – भाषा भारती, पृ. 31.

Cite this Article-

डॉ0 मधुर बाला यादव, विजय कुमार, "कमलेश्वर का जीवन–संघर्ष एवं कृतित्व के विविध आयाम", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:05, December 2024.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i5001

Published Date- 02 December 2024